35

परमाणु सिद्धान्त और शिक्षकों की भ्रान्तियाँ

पिछले साल इन्दौर में एक प्रशिक्षण शिविर में परमाणु सिद्धान्त के बारे में शिक्षकों के विचार जानने की कोशिश की गई। टेस्ट पेपर और बातचीत से पता चला कि ज़्यादातर शिक्षक भ्रम की स्थिति में हैं। उन्हें लगता है कि किसी तत्व में जो गुण होते हैं वे सभी गुण उस तत्व के एक अकेले परमाणु में भी होते हैं। परमाणु सिद्धान्त को लेकर ऐसी ही कई भ्रान्तियाँ व्याप्त हैं लेकिन इन सबके लिए सिर्फ शिक्षकों को ज़िम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता। क्योंकि हमारे स्कूल-कॉलेज की किताबें भी परमाणु की ऐसी ही छवि गढ़ती हैं। शायद यह मौका है इन सब बातों की तह में जाने का।

43

सामाजिक विज्ञानः पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा

पिछले तीन साल में एनसीईआरटी ने स्कूलीय पाठ्य-पुस्तकों में व्यापक परिवर्तन किए हैं। शायद देश में पाठ्य पुस्तकों के विकास के सन्दर्भ में पहली बार शिक्षा में काम करने वाले विभिन्न लोगों व समूहों को इतने बड़े पैमाने पर जोड़ा गया है। पिछले अंक से हमने इस नए प्रयास की समीक्षा का क्रम शुरू किया है जो अगले कुछ अंकों तक जारी रहेगा।

इस बार की समीक्षा कुछ अलग है। सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा उन किताबों को पढ़ने वाली एक विद्यार्थी - सम्पूर्णा बिस्वास - कर रही हैं। उनके मुताबिक न सिर्फ किताबों के रूपरंग में आमूलचूल बदलाव आए हैं बल्कि किताबों की भाषा, शैली, विषयवस्तु आदि में भी गुणात्मक फर्क दिखता है, जिसकी वजह से उन्हें पढ़ने में मज़ा आता है।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-3, (मूल क्रमांक-60) मई-जून 2008

इस अंक में

9 | **कुछ घूमना, कुछ बातचीत और समझना**
श्रीपर्णा

15 | **यूरेका! यूरेका! यूरेका!**
बाल फोण्डके

23 | **जलीय वनस्पतियाँ**
आमोद कारखानिस

29 | **खच्चर की जीव वैज्ञानिक त्रासदी...**
सुशील जोशी

35 | **परमाणु सिद्धान्त और शिक्षकों की भ्रान्तियाँ**
उमा सुधीर

43 | **सामाजिक विज्ञानः पाठ्य पुस्तकों की समीक्षा**
सम्पूर्णा बिस्वास

53 | **एक पौधा दस प्रयोग**
किशोर पंवार

61 | **ज्ञान और विचारों का स्वामित्व**
डेविड जरनेर मार्टिन

69 | **एक दिन कक्षा में**
मोहम्मद उमर

74 | **शुरुआती पठन-लेखन विकसित करने ....**
कीर्ति जयराम

89 | **बचपन**
जितेन्द्र कुमार

97 | **इण्डेक्स** (अंक 55-60)